आरती
श्री कुन्ज बिहारी

आरती कुन्ज बिहारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की।
गले में वैजन्ती माला, बजावें मुरली मधुर बाला,
श्रवण में कुण्डल झल काला, नन्द के आनन्द नन्दलाला।
नन्द के आनन्द मोहन बृजचंद परमानन्द
राधिका रमण बिहारी की॥
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक,
कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की॥
कनकमय मोर मुकुट विलसैं, देवता दर्शन को तरसैं,
गगन सैं सुमन बहुत बरसैं, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल रति गोप कुमारी की॥
जहां से प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी श्री गंगा,
स्मरण से होत मोह भंगा, बसी शिव शीश, जटा के बीच,
हरै अध कीच, चरण छवि श्री बनवारी की॥
चमकती उज्जवल तट रेणू, बजा रहे वृन्दावन वेणू,
चहुँ दिशि गोपी ग्वाल धेनू, हंसत मृदु मन्द, चांदनी चन्द,
कटत भव फन्द, टेर सुनो दीन भिखारी की॥